।। सुयं मे आउसं ।।

श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन का संवाद-सेतु

श्रुतदीप

विक्रम संवत २०७९ • वर्ष : ७ • अंक : २ • अक्तूबर २०२३

सम्यग्दर्शन

-श्रुतरत्न पू. गणिवर श्री वैराग्यरतिविजयजी म.सा.

मनुष्य का जीवन वर्तुलाकार है, जो तीन भागों में बंटा हुआ है। पहला भाग व्यावहारिक जीवन का है, दूसरा भाग पारिवारिक जीवन का है और तीसरा भाग हमारे अंतरंग जीवन का है। अधिकांश लोगों का जीवन व्यावहारिक और पारिवारिक भाग में ही खर्च होता है। उन्हें अपने अंतरंग जीवन के बारे में कोई जानकारी ही नहीं होती है। इसका बडा कारण यह है कि वे लोग सांसारिक व्यवहारों और पारिवारिक संबंधों में ही इतने व्यस्त रहते हैं कि उनके पास अपने व्यक्तिगत अस्तित्व के बारे में सोचने समझने के लिए समझ और समय ही नहीं है। अपने स्वयं के बारे में परिचित हैं या नहीं यह तलाशने के लिए हमें अपने-आप से तीन प्रश्न करने चाहिए-

'मै कौन हूं' (Who am I?)

'मैं इस संसार में क्यों हूं' (Why am I here?)

'मै यहां क्या कर रहा हूं' (What I am doing here?)

यदि हमारे पास इन तीनों सवालों के संतोषजनक जवाब है तो हम स्वयं को भरोसा दे सकते हैं कि- 'हां! मैं स्वयं को जान सकता हूं अथवा मैं अपनी पहचान स्वयं कर पा रहा हूं।' किंतु अधिकांश लोगों की बदनसीबी है कि उन्हें दुनियाभर की जानकारियां है मगर अपनी असली पहचान के बारे में पूरे अनजान हैं। इस अनजानता की वजह से हम अपना जीवन केवल दूसरों के लिए खर्च कर रहे हैं।

हमारी पहचान हमें खुद करनी पडेगी। आज हमारे पास वक्त है, यदि वक्त रहते यह काम नहीं हुआ तो पता नहीं आगे फिर कब ऐसा मौका मिलेगा?

उपरोक्त प्रश्न ही किसी भी मनुष्य की आध्यात्मिकता का आरंभबिंदु है। जैनदर्शन के अनुसार हमारा वास्तविक अस्तित्व हमारी आत्मा है, मगर मुश्किल यह है कि हम जन्म से ही एक अधूरी धारणा के साथ जी रहे हैं कि- 'मैं एक मनुष्य हूं।' मनुष्य होना यह हमारी असली पहचान नहीं है, मनुष्यता केवल उपरी-पहचान है। दूसरे लोग भले हमें मनुष्य रूप में स्वीकार करते हैं किंतु हमारे लिए हमारी पहचान तो केवल हमारी आत्मा है।

आत्मा की दो बडी खासियतें हैं। इन दो बडी बातों के द्वारा ही हमें अपनी आत्मा की पहचान होती है। पहली विशेषता यह कि, आत्मा में ज्ञान (ज्ञानशक्ति) है। ज्ञान के द्वारा हम हर अच्छी-बूरी वस्तु की पहचान कर सकते हैं। दूसरी खासियत यह कि- आत्मा में सुख है। जड वस्तु में ज्ञान और सुख दोनों नहीं हैं। वैदिक परम्परा में आत्मा को सत्, चित् और आनंदमय कहा गया है। सत् अर्थात् हकीकत-सच्चाई अथवा वास्तविकता, कल्पना नहीं। चित् के मायने हैं- ज्ञानमयता और आनंद का अर्थ है- सच्चा सुख।

प्रायः हमारी ये दोनों खासियतें- ज्ञान और सुख ढंके-छिपे और दबे पडे होते हैं, कारण आत्मा पर अनेक आवरण छाये हुए हैं। स्पष्ट और प्रत्यक्ष दिखाई देनेवाला आवरण है- शरीर। फिर विचारों का आवरण है, भावनाओं (इच्छाओं आदि) का आवरण, जिसके उपर संस्कारों का आवरण है। फिर इन सबके उपर है हमारे कर्मों का आवरण। अनेक प्रकार के कर्मों में सबसे मजबूत आवरण है- हमारा मोह। मोह के कारण ही आत्मा की ज्ञान और सुख की शक्तियां उल्टी दिशा में बह रही है। हम ज्ञान और सुख को आत्मा के बजाय बाहर तलाशते हैं। मोह के कारण गलत धारणाओं ने हमारे भीतर घर बना लिया है। हमने मान लिया कि-'मेरे अस्तित्व का केन्द्र मेरा शरीर है और दुनिया के तमाम सुख मेरे शरीर की पूर्ति के लिए जरुरी है।' यह धारणा जन्म-जन्मांतरों से चली आ रही है। धारणाएँ रेशम की डोर से बंधी गांठ जैसी दृढ बन गई है। इस मजबूत गांठ का नाम है- मिथ्यात्व। मिथ्यात्व अर्थात् झूठी समझ और झूठी धारणा। शास्त्र में मिथ्यात्व की इस गांठ को ग्रंथि कहा गया है। जब तक इस ग्रंथि का भेद नहीं होता तब तक सम्यक्त्व प्रकट नहीं होता है। सम्यक्त्व अर्थात् आत्मा की सच्ची समझ अथवा सीधे शब्दों में कहा जाये तो अपनी आत्मा से रु-ब-रु होना।

लिखा लिखी की है नहीं, देखा-देखी बात,
दुल्हा-दुल्हन मिल गये, फिकी पडी बारात।

सम्यक्त्व हमारा स्वभाव है। उसे बाहर से हांसिल नहीं करना पडता है, वह हमारे ही भीतर में दबा बैठा है। उसके लिए हमें अपनी धारणाओं को बदलना पडेगा। अनंतकाल से ये धारणाएं ही हमारे समकित में बाधक बनी हुई हैं। ये धारणाएं आसानी से बदल पाना मुमकिन नहीं है। धारणाएं अर्थात् झूठी समझ को सही समझ से बदला जा सकता है। धारणाएं बदलते ही पता चलता है कि 'मेरे जीवन का केंद्रबिंदु मेरा शरीर नहीं बल्कि मेरी आत्मा है।' यह प्रतीति (अहसास) ही सम्यग्दर्शन है। सम्यक्त्व के प्रकट होते ही दुनियां को देखने की दृष्टि बदलती है। दृष्टि बदलने का अर्थ है-जीवन के अभिगम में बदलाव। अभिगम बदलते ही नयी दिशा का रास्ता हाथ लग जाता है- यही सम्यग्दर्शन है, इसे ही निश्चय सम्यग्दर्शन कहा गया है। पू. महामहोपाध्यायजी महाराज कहते हैं-

दर्शन मोह विनाशथी, जे निर्मल गुणठाण,
ते निश्चय समकित कह्युं, तेहनां एह अहिठाण।

सम्यग्दर्शन दिखाई देनेवाली वस्तु नहीं है। जिस तरह शक्कर की मीठास अथवा फूल की सुगंध दिखाई नहीं देती मगर उसका पूरा-पूरा अनुभव होता है, उसी तरह सम्यग्दर्शन भी दिखाई नहीं देता किंतु उसका अनुभव जरुर किया जा सकता है। हनुमान ने छाती चीरकर अपने भीतर के राम को दिखाया उस प्रकार सम्यग्दर्शन को देखना या दिखाना असंभव है। सम्यग्दर्शन को साबित करने की जरुरत नहीं है किंतु आत्मा में बदलाव आते ही दृष्टि में बदलाव आता है और दृष्टि बदलते ही उसका प्रभाव व्यवहार में झलकता देखा जा सकता है, इस झलक के द्वारा सम्यग्दर्शन का अनुमान लगाया जा सकता है। सम्यग्दर्शन की उपस्थिति में प्रकट होनेवाला आचरण **व्यवहार सम्यग्दर्शन** है।

निश्चय-सम्यग्दर्शन प्राप्त करने की कर्मग्रंथ की प्रक्रिया और सम्यग्दर्शन के व्यवहारों का शास्त्रों में विविध स्थानों पर विस्तार से वर्णन मिलता है। पूज्य आचार्यश्री हरिभद्रसूरिजी महाराज ने इन तमाम मुद्दों का संकलन करके **सम्यक्त्व सप्ततिका** की रचना की है। एक अन्य अज्ञात महात्मा ने **सम्यक्त्व कुलक** नामक कृति की रचना की है। १५-१६ वीं शताब्दी के पश्चात् गुजराती भाषा में इस विषय पर अनेक रचनाएँ शब्दबद्ध

हुई हैं। उनमें मुनिश्री **चरणकुमार** विरचित **समकित सज्झाय** भी है। मुनि चरणकुमार उपा. श्री **कमललाभजी** के शिष्य **देवविमल** के शिष्य थे। इस कृति में समकित की प्राप्ति किस तरह हो सकती है, उसका वर्णन है। साथ ही इसमें समकित प्राप्त आत्मा की सोलह विशेषताएं भी दर्शायी हैं-

१) समकितधारी आत्मा नवतत्त्व का अभ्यासु होता है।

२) उसे आगम के उपदेशों पर प्रेम होता है।

३) वह अपने स्वभाव से गुणों का अनुरागी होता है।

४) वह अवगुणों का त्यागी होता है।

५) वह धीर-गंभीर होता है, उतावला और वाचाल नहीं होता है।

६) विषय विकार के विचार भी उसके मन में नहीं आते हैं।

७) समकिती आत्मा वाद-विवाद और परनिंदा से दूर रहता है।

८) उसके मन में तीव्र राग-द्वेष नहीं होते हैं।

९) उसके जीवन में समता और इंद्रिय निग्रह के गुण होते हैं।

१०) वह स्याद्वाद को समझने वाली गुणवान आत्मा होती है।

११) वह कुमति और कदाग्रह से विलग रहती है।

१२) समकितधारी व्यक्ति आत्मा के सच्चे स्वरूप का जानकार होता है।

१३) वह प्रत्येक बात की हंस की तरह परीक्षा करता है।

१४) वह भगवान द्वारा कहे गये नयों के भाव को जानता है।

१५) वह कर्म के प्रकारों को भलिभांति समझता है।

१६) समकितधारी मनुष्य दूसरों के मर्म को उजागर नहीं करता है।

इस सज्झाय में **कर्मग्रंथ** और **स्थानांगसूत्र** के उद्धरण देकर समकित की महिमा दर्शायी है और समकित दृष्टि एवं मिथ्या दृष्टि के बीच का अंतर भी भिन्न-भिन्न रूप से समझाया है। अंत में कुशिष्य को सीख-सलाह देने का निषेध किया है। **उत्तराध्ययनसूत्र** में **सम्यक्त्व पराक्रम** अध्ययन है, उसका उल्लेख भी किया है। महावीर स्वामी भगवान से समकित की मांग (प्रार्थना) की गई है।

सम्यग्दर्शन प्राप्ति के लिए धारणा बदलनी पडती है। धारणा बदलने के दो मार्ग हैं- सच्ची समझ और ध्यान। सच्ची समझ का अर्थ है- मानसिक वातावरण (Inner Environment)। मानसिक जगत् में सम्यग्दर्शन के अनुकूल वातावरण निर्मिति के लिए बाह्य आलंबन जरुरी हैं। मन दो प्रकार के आलंबनों से प्रभावित होता है। पहला चित्र और दूसरा है विचार एवं कल्पना और शब्द। इन दोनों आलंबनो में आचरण पूरक बनता है। मन को सम्यग्दर्शन प्राप्ति के लिए जरुरी विचार और समझ की जरुरत होती है। सम्यग्दर्शन प्राप्ति के पश्चात् की अवस्था की कल्पना (Visualizing) करना, यह कला सम्यग्दर्शन प्राप्त करने में जरुरी सहायक बनती है। जैसे-जैसे मानसिकता बदलती जाती है वैसे-वैसे आत्मा सम्यग्दर्शन के नजदीक जाने में समर्थ बन सकती है। इस सफलता के लिए कौन-से विचार और कौन-से गुण जरुरी है? इसका वर्णन तो हमारे लिए पथदर्शक बनता ही है बल्कि हम सम्यग्दृष्टि है अथवा नहीं, इस बात की परीक्षा के लिए भी उपरोक्त सोलह गुणों का वर्णन परीक्षा रूप सिद्ध हो सकता है।

(मूल गुजराती लेख का हिंदी अनुवाद-ओमजी ओसवाल)

समाचार

विक्रम संवत २०७९, अषाढ सुद १३ शनिवार दि. १ जुलै २०२३ के शुभदिन परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् **विजयरामचंद्रसूरीश्वरजी** महाराजा के शिष्यरत्नश्रुतरत्न परम पूज्य गणिवर्य श्री **वैराग्यरतिविजयजी** म.सा.एवं परम पूज्य साध्वीजी श्री **हर्षरेखाश्रीजी** म.की शिष्या पूज्य साध्वीजी श्री **जिनरत्ना श्रीजी** म. आदि का श्री **सुजय गार्डन जैन संघ**, मुकुंदनगर पुणे में चातुर्मास प्रवेश उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

१४ से१७-०८-२०२३ सुजय गार्डन जैन संघ एवं श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में चार दिवसीय **प्राचीन देवनागरी लिपि कार्यशाला** संपन्न हुई। इस कार्यशाला में ४५ लोगों ने सहभाग लिया। **श्रुतभवन** के संशोधन विभाग प्रमुख **श्री अमितजी उपाध्ये** ने लिपि सिखाई।

दि. २३-०६-२०२३के दिन परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय **राजरत्नसूरीश्वरजी** म.सा. आदि साधु-साध्वीजी भगवंत श्रुतभवन पधारे।

दि.२०-०८-२०२३ के दिन **श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन** संचालित **श्रुतभवन संशोधन केंद्र** तथा **सुजय गार्डन जैन संघ** की ओर से **श्रुतसंवाद** कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में **डो. जितेंद्र बी. शाह** ने **हमारी श्रुतसंपदा कल, आज और कल** इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। पूज्य गुरुदेव ने **श्रुत की महत्ता** के विषय में मार्गदर्शन किया। नये **श्रुतदीप संशोधन एवं अध्ययन केंद्र** के मॉडेल

का भी अनावरण हुआ। इस प्रसंग पर पू. सा. श्री **जिनरत्नाश्रीजी** म.सा. द्वारा ब्राह्मी लिपि में लिखित '**बंभी तूं श्रुतदेवी**' इस पुस्तक का विमोचन संपन्न हुआ। इस अवसर पर **प्राचीन हस्तलिखित लेखन सामग्री** तथा **श्रुतभवन द्वारा प्रकाशित पुस्तक** एवं **हस्तलिखित सूचिपत्रों** की प्रदर्शनी भी रखी थी।

इस अवसर पर मा. **श्री प्रकाशजी धारीवाल**, सौ. **दीना प्रकाशजी धारीवाल** मा. **श्री राजेशजी सांकला**, मा. **श्री प्रकाशजी धोका**, मा. **श्री एस. के. जैन**, मा. **श्री दिनेशजी परमार**, मा. **श्री अमृतलालजी बाफना**, मा. **श्री सुरेशजी परमार**, मा. **श्री नगराजजी गुंदेशा**, मा. **श्री इंदरजी चौहान**, श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन के सभी ट्रस्टी तथा सुजय गार्डन जैन संघ के सभी ट्रस्टी आदि मान्यवर उपस्थित थे।

दि. १०-०९-२०२३ के दिन प.पू.आ. श्री **नरदेवसागरसूरीश्वरजी म.सा.** की निश्रा में **लेकटाऊन सोसायटी** में **श्रुतभवन** का प्रेझेंटेशन प्रस्तुत किया। प्राचीन हस्तलिखित लेखन सामग्री तथा श्रुतभवन द्वारा प्रकाशित पुस्तक एवं हस्तलिखित सूचिपत्रों की प्रदर्शनी भी रखी थी। पूज्य आचार्य भगवंत ने **श्रुत का महत्त्व** इस विषय पर व्याख्यान दिया।

२७-०८-२०२३ के दिन पूज्य गुरुदेव की निश्रा में सुजय गार्डन जैन संघ में श्री **श्रुतदेवी पूजन** संपन्न हुआ। लाभार्थी- **राजेंद्रकुमार मोहनलालजी बांठिया** परिवार।

३०-०८-२०२३ से ०१-०९-२०२३ के दिन कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक (नागपुर) द्वारा आयोजित चर्चासत्र **"भारतीय नाट्य और नाट्यशास्त्र में प्राकृत का योगदान"** में श्रुतभवन की तरफ से श्री **अमोघजी प्रभुदेसाई**ने **'भाणों में प्राकृत का प्रयोग- कुछ निरीक्षण'** इस विषय पर शोधनिबंध प्रस्तुत किया।

श्रुतभवन के पदाधिकारीओं ने पुणे के विविध संघों में प्रस्तुतीकरण किया। पू. आ. श्री **राजरत्नसूरीश्वरजी** म.सा. (गोटीवाला धडा), पू. आ. श्री **जिनरत्नसागरसूरीश्वरजी** म.सा. (वर्धमानपुरा), पू. पं. श्री **जितरक्षितविजयजी** म.सा. (गोडीजी मंदिर), पू. पं. श्री **अर्हंप्रभविजयजी** म.सा. (ईशा एमरल्ड), पू. मु. श्री **नंदिभूषणविजयजी** म.सा. (पंचदशा ओसवाल धडा), पू. मु. श्री **मुक्तिभूषणविजयजी** म.सा. (टिंबर मार्केट), पू. मु. श्री **निर्मलयशविजयजी** म.सा. (केंप), पू. मु. श्री **पीयूषचंद्रविजयजी** म.सा. (तलेगाव)

दि. ३०-९-२०२३ से दि. १-१०-२०२३ के दिन हिराचंद नेमचंद जैन अध्यासन - पुणे विश्वविद्यालय एवं वर्धमान एज्युकेशन एण्ड रिसर्च इन्स्टिट्युट, पुणे के संयुक्त तत्त्वावधान में जैन विद्या के विविध आयाम इस विषय पर द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया था। श्रुतभवन से **अमित उपाध्ये** ने **प्राकृत हस्तलिखितों का संपादन** एवं **अमोघ प्रभुदेसाई** ने **सोमचंद्रगणिकृत वृत्तरत्नाकरवृति - एक परीक्षण** इन विषयों पर शोधनिबंध प्रस्तुत किये।

दि. ०८-०७-२०२३ के दिन International School for Jain Studies के डायरेक्टर **डॉ. श्रीनेत्र पांडेजी** अपने विदेशी विद्यार्थी एवं शिक्षकों के साथ **श्रुतभवन** पधारे। साथ में सावित्रीबाई फूले पुणे विद्यापीठ के जैन अध्यासन प्रमुख के.के. जैन सर भी पधारे।

दि. २७-०९-२०२३ के दिन धरोहर संस्था के संस्थापक श्री **संजयजी सिंघल**, **हिंदु स्पिरिचुअल सेवा फाउंडेशन** के महाराष्ट्र प्रदेशाध्यक्ष श्री **अशोकजी गुंदेचा**, **हिंदु स्पिरिचुअल सेवा फाउंडेशन** के महाराष्ट्र उपाध्यक्ष, **महाराष्ट्र गोसेवा आयोग** के सदस्य एवं **इस्कॉन पुणे** के उपाध्यक्ष **श्रीमान श्वेतद्वीप दास** (संजय भोसले) श्रुतभवन पधारे।

रविवार दि. ०३-०९-२०२३ के दिन **सुजय गार्डन जैन संघ**, मुकुंदनगर के तत्त्वावधान में **'सायन्स और जैन विज्ञान'** इस विषय पर ज्ञानसत्र संपन्न हुआ। इस ज्ञानसत्र में **'सायंटिफिक बेझ ऑफ जैनिझम्'** विषय पर **'डॉ. सम्राट शाह'** ने व्याख्यान दिया। दूसरे व्याख्यान में आर्किटेक्ट **'श्री मयंकभाई बड़जात्या'** ने **'भक्तामर स्तोत्र और ऊर्जाविज्ञान का संबंध'** प्रस्तुत किया। ज्ञानसत्र के निश्रादाता **'श्रुतरत्न पूज्य गणिवर श्री वैराग्यरतिविजयजी म.सा.'** ने प्रश्नोत्तर में **जैन दर्शन में काल की अवधारणा व अणुविज्ञान** के विषय में महत्त्वपूर्ण बातें रखी। इस ज्ञानसत्र में ५०० लोगों ने सहभाग लिया। मंच संचालन **रमेशजी गांधी** ने किया।

शाम ८ बजे **'पाहिनीदेवी'** का सोलो एक्ट प्रस्तुत हुआ। महाराष्ट्री प्राकृत के व्याकरण कर्ता आचार्य **श्री हेमचंद्रसूरीश्वरजी** म. की जीवन घटना की संवेदनात्मक प्रस्तुति सौ अर्चना जोनी शाह (मुंबई) ने की।

कार्यविवरण

शास्त्र संशोधन प्रकल्प अंतर्गत **पृथ्वीचंद्रचरित्र , गौतमस्वामी स्तोत्र सह टीका , छंदविषयक ग्रंथ , प्राकृत लघुकृतिसंग्रह, शाश्वतजिनचैत्यस्तवन , राक्षसकाव्य सह टीका , पार्श्वजिनस्तव सह अवचूरि , हितशिक्षाषट्त्रिंशिका , चंद्रप्रभजिनस्तुति** आदि ग्रंथों का संपादन कार्य प्रवर्तमान है। पू.सा.श्री **मधुरहंसाश्रीजी म. आत्मनिंदा** ग्रंथ का लिप्यंतर कर रहे हैं। पू.सा. **श्री धन्यहंसाश्रीजी म. पार्श्वजिनस्तव** ग्रंथ का लिप्यंतरकर रहे हैं। अभ्यास वर्ग प्रकल्प में विभिन्न ग्रंथों के संपादन विधा की पद्धति का अध्ययन प्रवर्तमान है।

वर्धमान जिनरत्नकोश प्रकल्प अंतर्गत पू. आ. श्री **मुनिचंद्रसू.** म., पू. आ. श्री **अभयदेवसू.** म., पू. आ. श्री **कुलबोधिसू.** म.,पू. आ. श्री **हर्षवर्धनसू.** म.,पू. आ. श्री **जयदेवसू.** म.,पू. पं. श्री **असंगयोगवि.** म., पू. मु. श्री **धर्मरत्नवि.** म., पू. मु. श्री **ऋजुशेखरवि.** म., पू. मु. श्री **वंदनरुचिवि.** म., पू. मु. श्री **चंद्रदर्शनवि. म.**, पू. मु. श्री **मंगलयशवि. म.**, पू. मु. श्री **पार्श्वसुंदरवि. म.**, पू. मु. **श्री तीर्थयशवि. म.**, पू. मु. श्री **कृपारत्नवि.** म., पू. मु. श्री **मेहुलप्रभसागरजी** म., पू. मु. श्री **अभिनंदनचंद्रसागरजी.** म., पू. मु. श्री **विनयचंद्रसागरजी**. म., श्री **महेंद्र जैन**, श्री **भूषण शाह**, प्रा. **पीटर फ्लुगल** तथा श्री **महेश देसाई** को हस्तप्रत संबंधि माहिती प्रदान करने का लाभ मिला।

प्राचीन श्रुतसंपदा के समुद्धार के लिए समुदार सहयोग देनेवाले महानुभाव

श्री हालारी विशा ओसवाल आदिजिन सेवा ट्रस्ट,
श्री आदिनाथ जिन मंदिर, जामनगर
श्री हरेनभाई कांतिलाल शाह परिवार, पुणे
श्री अभयजी श्रीश्रीमाळ, अभूषा फाउंडेशन, चेन्नई
श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक सुधारा खातानी पेढी, महेसाणा
श्री हसमुखलाल एम. शाह, मुंबई
सौ कविताबेन रितेशभाई कोठारी, पुणे
श्री मदुराई जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, मदुराई
सौ. सीमा संतोष दोशी, पुणे
श्री अर्पित संतोष दोशी, पुणे
श्री समकित संतोष दोशी, पुणे

श्री संतोष हिरालाल दोशी, पुणे
श्री गोडी पार्श्वनाथ लुंकर चेरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई
ट्विंकलबेन शाह (USA)
हिम्मतलाल ताराचंद व्होरा, पुणे
हेमचंद्र परिवार, माढ़ा
कोठारी परिवार, लेकटाउन, पुणे
श्री दलपतराजजी बोहरा, लेकटाउन, पुणे
श्री हर्षदभाई मेहता, लेकटाउन, पुणे
श्री सुभाषभाई जैन, लेकटाउन, पुणे
श्री चंद्रकमल नागावत, लेकटाउन, पुणे
श्री जिगरभाई पारेख, लेकटाउन, पुणे
श्री उपेशभाई शाह, लेकटाउन, पुणे

श्री अमीचंदजी गांधी, लेकटाउन, पुणे
श्री संजीव शाह, लेकटाउन, पुणे
श्री गौतम काठेड, लेकटाउन, पुणे
भाग्यानंद सामायिक मंडल, लेकटाउन, पुणे
फेन्सीबेन अशोककुमार गोलेचा, मदुराई
श्री निरव सलोत, लेकटाउन, पुणे
अशोक एण्ड कंपनी, मदुराई
कामनाबेन बारमेचा, पुणे
श्री राहुल शाह, लेकटाउन, पुणे
सौ. ज्योत्स्नाबेन प्रविणभाई भोगीलाल परिवार, अमदावाद
सुमित कटारिया, लेकटाउन, पुणे

श्री श्रेयस शाह, लेकटाउन, पुणे
ओमस्तुति सचिन शाह, लेकटाउन, पुणे
सोनिग्रा परिवार, लेकटाउन, पुणे
श्री नीरव शाह, लेकटाउन, पुणे
रमिला लोडाया, लेकटाउन, पुणे
शाश्वती ग्रुप लेकटाउन, पुणे
श्री राजेश जेठमल मेहता, लेकटाउन, पुणे
कविता चोपडा, लेकटाउन, पुणे
श्री कुशल पारेख, लेकटाउन, पुणे
लता पारेख, लेकटाउन, पुणे
श्री अक्षय शाह, पुणे
श्री हितेशभाई चंपालाल सुराणा

प्रतिभाव

It is truly inspiring to see such a hard and serious intellectual effort to preserve this knowledge for mankind. I have much to learn from this example. Jai Jinendra.

- Leonardo Stockler (Brazil)

I visited the institute first time and found the projects going on very important topics. Scholars working on the projects and officials are very learned. I appreciate the effort of the institute and their contribution to academics.

Dr. Shrinetra Pandey,
(Director (Acting),
International School for Jain Studies, Shivajinagar, Pune)

सुवाक्य

आत्मा को पुछे गए हर एक सवाल
का जवाब मिलता ही है।
प्रश्न इतना ही है- आत्मा जो जवाब
देगी वह हम सुनने को तैयार है।

-The Immortal Heart
- सेरदार ओस्कान

Printed Matter

Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From : Shrutbhavan Research Centre
(Initiation of Shrutdeep Research Foundation)
47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046
Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutdeep.com

For Informative and Inspirational speeches about Shrut please subscribe our Shrutdeep YouTube channel
Shrutbhavan Pune